द्वितीय सेमेस्टर (एमए) हिन्दी

संस्कृत साहित्य का इतिहास

PAPER CC – 7

संस्कृत गीतिकाव्य के विकास में विभिन्न रचनाकारों का योगदान

➢ अमरूक शतक :

अमरूक नामक कवि का एक शतक प्राप्त होता है जिसमें प्रणय तथा श्रृंगार की ललित लीला भंगियों का चटख मनोरम चित्र उभरता है। आठवीं शती के वामन ने इसके तीन श्लोक उद्घृत किए हैं और नवीं शती के आनंदवर्धन ने इसके पद्यों को प्रबंधयामान कहते हुए बताया है कि– "रस, भाव तथा अर्थ का जितना सन्निवेश एक समूचे प्रबंध काव्य में किया जा सकता है उतना महाकवि अमरूक के एक–एक पद्य में हो गया है।" "गागर में सागर" भरने की कहावत यहाँ पूर्णतया चरितार्थ होती है। शतक में कवि ने छंदों की विविधता और नवीनता बनाए रखी है जिससे एकरसता नहीं आ पाती। मनोभावों की अभिव्यंजना में वह अत्यंत दक्ष है। भाषा सरल एवं सरल है। संयोग और वियोग के भावों का यहाँ मार्मिक अंकन हुआ है। इसके टीकाकार रविचन्द्र के अनुसार–"इसके सभी पद्य द्वैअर्थक हैं जिनमें श्रृंगारिक और दार्शनिक दोनों अर्थों का बोध होता है।" इस पर दर्जनों टीकाएँ प्राप्त होती है।

➢ गीत गोविंद :

बारहवीं शती में बंगाल के राजा लक्ष्मण सेन के शासन में केन्दुबिल्व नामक ग्राम के निवासी भक्त कवि जयदेव ने "गीत गोविंद" नामक एक अपूर्व गीति काव्य की रचना की। "गीत गोविंद" एक माधुर्यपूर्ण सरस काव्य है जिसमें राधा–कृष्ण की विविध प्रणय दशाओं का सरल और ललित चित्रण है। संस्कृत काव्य में राधा की प्रतिष्ठा सर्वप्रथम जयदेव ने ही की। संस्कृत की गीति काव्य परंपरा में अनेक कारणों सें यह काव्य विलक्षण एवं महत्वपूर्ण माना जाता है। भाषा, संगीत एवं विविध कलाओं पर कवि का अद्वितीय अधिकार इस कृति में परिलक्षित होता है। मैग्डनल ने इसको एक ऐसी रचना माना है जो विशुद्ध गीति और विशुद्ध रूपक के एकांतिक मिश्रण की ओर संकेत करता है। सर विलियम जॉन्स इसे लघु ग्राम्य रूपक कहते हैं। और लासन्न के मत में यह गीति रूपक है। लियोपॉल्ड श्रोदर इसे परिष्कृत 'यात्रा' मानते हैं। प्रो० पीशेल तथा सिल्वालेवी इसे संगीत तथा रूपक के मध्य श्रेणी की रचना मानते हैं। स्पष्ट है कि विश्लेषकों और विचारकों के बीच इसकी रूपगत पहचान को लेकर जो विभ्रम है, वह इसकी विलक्षणता का अभूतपूर्व प्रमाण है। सम्पूर्ण विश्व साहित्य में सौंदर्य एवं माधुर्य से ऐसी ओत प्रोत रचना दूसरी नहीं प्राप्त होती। इसकी भाषा भावों के नितांत अनुरूप है। शब्द संकूल (पूरित) संघटना में समास रहित पदों का ऐसा कलात्मक सम्मिश्रण किया गया है कि बरबस कवि के शब्द प्रयोग कौशल मुग्ध कर लेता है। इसके श्लोक

कहीं गद्य और गीत के मिश्रित रूप के साथ एक अद्‌भुत अभिनय काव्य शैली का जैसे सूत्रपात करते हैं। जयदेव की अर्थ एवं रस की अभिव्यंजक, कोमलकांत पदावली, ललित एवं अनुप्रास युक्त छंद विद्यान तथा रमणीय एकता पाठक के मन पर छा जाती है और इसमें न केवल कवि के रचनाकाल तक प्रचलित विविध कलाओं का सामंजस्यपूर्ण निर्दशन है बल्कि, ऐसी कलाओं का विन्यास भी प्रतिफलित होता है, जिनका जन्म और विकास आगे के युगों में हुआ। प्रत्येक पद्य के साथ कवि ने संगीत निर्देश कर दिया है।

भारतीय टीकाकार राधा–कृष्ण के प्रेम की प्रतीकात्मक व्याख्या करते हैं जिसके अनुसार कृष्ण परब्रह्म हैं और राधा जीवात्मा। "गीत गोविंद" के प्रशंसकों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। इसे भक्ति काव्य का भी सूत्रपात करनेवाला ग्रंथ बताया जाता रहा है। इसकी टीकाएँ बड़ी संख्या में लिखी गई हैं जो विविध भाषाओं में दिखाई पड़ते हैं। संसार की अनेक भाषाओं में इसके अनुवाद हुए हैं और बड़े–बड़े गायक इसे गाते रहे हैं।

➢ गोवर्धनाचार्य :

ये बंगाल के राजा लक्ष्मण सेन के सभापंडित और जयदेव के समकालीन कवि थे जिन्होनें 'हाल' की "गाहा सतसई" के अनुकरण पर 'आर्यासप्तशती' का रचना की जिसमें सात सौ आर्या छंदों में प्रेमी–प्रेमिकाओं की विविध प्रेम–क्रीड़ाओं का सरस चित्रण है। नायिकाओं में नगर एवं ग्राम दोनों ही स्त्रोतों से आने वाली सुंदरियाँ हैं। इस काव्य में

काव्यात्मकता उतनी नहीं है जितनी रचना की कुशलता। 'हाल' के संक्षिप्त शब्द चित्रों जैसी मार्मिकता रसमयता का यहाँ अभाव है। फिर भी, आगे अनेक भाषाओं में इसी पद्धति का अनुकरण करते हुए 'सतसईयाँ' लिखी गयी। हिन्दी में 'बिहारी सतसई' विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

आगे के गीति काव्यों में बारहवीं शती के कवि धोयी का "पवन–दूत", पंडितराज जगन्नाथ का "भामिनी विलास" और अनेक प्रकार के दूत काव्य चौदहवीं–पन्द्रहवीं शती तक लिखे जाते रहे।

➢ धार्मिक गीति काव्य : (स्तोत्र काव्य) :

स्तोत्र काव्य का उद्‌भव भी प्राचीन युगों में दिखाई पड़ता है। इस प्रसंग में अश्वघोष जैसे कवि का नाम भी स्मरण किया जाता है। पाँच सौ ई० में सिद्धसेन दिवाकर नामक जैन कवि, हर्षवर्धन, बाणभट्‌ट, मयूर आदि कवियों के नाम भी लिए जाते हैं। केरल के राजा कुलशेखर ने कृष्ण स्तुतिपरक स्तोत्र काव्य "मुकुन्दमाला" की रचना की जो प्रांजल, सरस और प्रभावशाली है। आदि गुरू शंकराचार्य के अनेक स्तोत्र प्राप्त होते हैं। वैष्णव वेदांत की विविध शाखाओं से जुड़े आचार्यों का विशाल स्तोत्र साहित्य भी इसी श्रेणी में परिगणित होते हैं। विशेष रूप से विष्णु और उनके अवतार शिव–शक्ति के विविध रूप, गणेश और सूर्य जैसे देव–विग्रहों से जुड़े हुए स्तोत्र लगातार भारत के विविध प्रदेशों में रचे जा रहे थे। स्वाधीनता आंदोलन के दौरान भारत माता या राष्ट्र लक्ष्मी को संबोधित करके स्तोत्र भी पर्याप्त संख्या में लिखे गए हैं।

➢ सुभाषित संग्रह :

इस श्रेणी के अंतर्गत वे संग्रह ग्रंथ हैं जिनमें विविध युगों के प्रतिभाशाली, सुपरिचित–अपरिचित, प्रसिद्ध–अप्रसिद्ध कवियों की सूक्ति–सुभाषित संग्रह किए गए हैं। बारहवीं शती का "कवीन्द्र रस समुच्च" ऐसे ग्रंथों में सर्वप्राचीन है। तेरहवीं शती के श्रीधर दास का "सदूक्तिकरूणामृत" जल्ह्ण की रचना "सुभाषित मुक्तावली" रूप गोस्वामी की "पद्यावली" चौदहवीं शती की रचना "शार्ड.धर पद्धति" वल्लभदेव की "सुभाषितवली" और आगे निर्णय सागर प्रेस बम्बई से प्रकाशित "सुभाषित रत्न" भांडारागार; ऐसी कृतियों में प्रमुख रूप से परिगणित है।

प्रस्तुतकर्ता
आयुषी रॉय
अतिथि शिक्षक
हिन्दी विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना
E-mail Id : ausheeroy.roy@gmail.com